

आसमान गिरा

एक खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था।
अचानक जोर की आवाज हुई – धम्म!
खरगोश चौंककर उठ गया।



खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा आसमान गिर रहा है। वह डर गया और भागने लगा।



खरगोश भागते-भागते बोला—

आसमान गिर
रहा है, भागो!
भागो! जल्दी
भागो!

खरगोश भाई, कहाँ
भागे जा रहे हो?

आसमान गिर रहा
है! जल्दी भागो!



लोमड़ी भी भागने लगी। आगे जाकर उन्हें
एक भालू मिला।

ठहरो, ठहरो!
कहाँ भागे जा
रहे हो?

भागो! तुम भी
भागो! आसमान
गिर रहा है!

भालू भी उनके साथ भागने लगा। खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले।

अरे! सब क्यों भागे जा रहे हो? ठहरो, कुछ बताओ तो।

आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो।

हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे – आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमड़ी, उसके पीछे भालू और सबसे पीछे हाथी।



भागते-भागते उन्हें शेर मिला।

तुम सब क्यों
भाग जा रहे हो?



हाथी बोला—

आसमान गिर रहा
है! तुम भी भागो!



शेर ने दहाड़कर कहा—

आसमान गिर रहा है!
कहाँ गिर रहा है? रुको!

यह सुनकर सभी
जानवर रुक गए।

शेर ने पूछा, "किसने कहा आसमान गिर रहा है?"

भालू ने
कहा।

मुझसे तो
लोमड़ी ने
कहा।

मुझसे तो
खरगोश ने
कहा...

सबसे पहले
इसी ने कहा था।

शेर बोला, "कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान?"

मैं पेड़ के नीचे सो
रहा था! वहीं धम्म
से आसमान गिरा!

शेर ने कहा, "चलो, चलकर देखें!"



वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा।



वहाँ एक बड़ा-सा फल गिरा पड़ा था। तभी वैसा
ही एक और फल गिरा— धम्म!

धम्म!